10

एक छोटा नाटा पापी

(लूका 19:1-10)

बाइबल के बहुत से पात्रों का कई लोगों को पता भी नहीं है, परन्तु छोटे कद वाले आदमी जक्कई[1] के बारे में जिसका नाम नये नियम में आया तो एक ही बार संक्षिप्त से दश्य में है, परन्तु उसे छोटे-छोटे बच्चे भी जानते हैं। संडे स्कूल के बच्चे कई बार एक गीत गाते हैं:[2]

जक्कई एक छोटा आदमी था
वह बहुत नाटा था;
वह गूलर के पेड़ पर चढ़ गया,
और यीशु को देखता था।
एक दिन यीशु उस रास्ते से गए,
उसने ऊपर देखा जब और कहा,
ऐ "जक्कई नीचे उत्तर आ
आज तेरे घर में मैं खाना खाऊंगा
आज तेरे घर में नजात आई है!"[3]

अफसोस की बात है कि हममें से अधिकतर लोगों ने जक्कई के बारे में पढ़ना छोड़ दिया था। जक्कई की कहानी में बहुत अच्छे और बेहतरीन सबक हैं। उदाहरण के लिए आप में से कइयों को यह आयत आसानी से याद आ जाएगी: ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुए को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया है'' (लूका 19:10)। क्या आपने कभी यह विचार किया है कि यह आयत कहां कही गई थी? यह आयत जक्कई की कहानी में मिलती है।

थोड़ी देर के लिए आइए लूका 19 में से इस ''नाटे कद के आदमी'' की कहानी को पढ़ते हैं, जो ''छोटा नाटा पापी'' था। यह कहानी पढ़ते हुए बाइबल में से कुछ ''छोटे सबक'' लेना चाहता हूं।

धन से एक छोटा सबक
(लूका 19:1, 2)

अध्याय का आरम्भ होता है, ''वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था'' (आयत 1)। यीशु यरूशलेम को जा रहा था। कई महीनों से वह ''यरूशलेम की ओर जा रहा था,'' परन्तु अब वह सचमुच उधर जा रहा था। वह बहुत निकट पहुंच गया था, क्योंकि यरीहो यरूशलेम से केवल सत्रह मील था।

यह एक यादगरी दौरा था। जैसे-जैसे यीशु यरूशलेम के निकट पहुंचता गया वैसे-वैसे भीड़

बढ़ती गई। यरीहो में एक अंधे बरतिमई के ठीक होने की एक प्रसिद्ध घटना पहले ही घट चुकी है (लूका 18 के अंत में लिखित)। अब यीशु ने वहां एक नाटे से पापी से मिलना था।

यरीहो पूर्व ऐतिहासिक समय के सब से प्राचीन नगरों में से एक है।[4] आज यदि आप उस नगर में जाएं तो आप को वहां मिट्टी के ढेरों की एक के ऊपर एक परतें मिलेंगी।[5]

यीशु के इस नगर में आने के समय, इसकी जनसंख्या 1,00,000 के लगभग थी। यरीहो खजूर के पेड़ों[6] तथा गुलाब के बागों के लिए प्रसिद्ध था। हेरोदेस महान और उसके बेटे अरखिलाउस ने यरीहो को और भी सुंदर बना दिया था। उन्होंने वहां एक बहुत बड़ा सफ़ेद महल, एक थिएटर और एक अखाड़ा बना दिया था।[7] कुछ सड़कों के किनारे पेड़ लगे थे, जिन्हें बाइबल में गूलर के पेड़ कहा गया था।[8] ये शहतूत-अंजीर[9] के पेड़ अर्थात शहतूत के पत्तों जैसे जंगली अंजीर के पेड़ थे। यह तीस से चालीस फुट तक ऊंचे होते थे। उनके पत्ते छोटे होते थे और उनकी शाखाएं ज़मीन तक लगी होती थीं। उनकी छांव थके हुए राहगीरों को राहत देने वाली होती थी।

यरीहो की और भी कई विशेषताएं थीं। एक विशेषता इसका कृषि-प्रधान होना था। बहुत से खजूर के पेड़ थे, जिनका फल दुनिया भर में बिकता था। यरीहो गुल मेहंदी के बागों के लिए जिनकी सुगंध मीलों तक होती है दुनिया भर में मशहूर था। गूगल के इन पेड़ों की मरहम सुगन्धित तथा शहद देनी वाली होती थी, जिसे चंगाई देने वाले इसके गुणों के कारण जाना जाता था।

यरीहो के समृद्ध होने का एक और कारण इसकी भौगोलिक स्थिति थी। यरीहो एक बहुत बड़े व्यापारिक मार्ग के बीच में बसा हुआ था। यरदन घाटी में बसे, यरीहो से यरूशलेम तथा नदी पार जाने का एक मार्ग था जिस कारण इसका पूर्वी देशों से सम्बन्ध था। यरीहो के उत्तर में दमिश्क, सूर और सैदा के साथ, पश्चिम में कैसरिया और यापा के साथ और दक्षिण में मिस्र के साथ व्यापारिक सम्बन्ध थे। यरीहो में से निकलने वाले हर सामान पर कर वसूला जाता था (अपने मन में यह बात रखना)।

यीशु की योजना शायद, यरीहो में से जल्दी से निकलकर यरूशलेम जाने की थी। अगर यह बात थी तो कुछ ऐसा होने वाला था, जिस कारण उसे बाद में अपनी योजना बदलनी पड़ती थी।

''और देखो, जक्कई नाम एक मनुष्य था'' (आयत 2)। ''जक्कई'' एक इब्रानी शब्द है जिसका अर्थ है ''शुद्ध'' या ''धर्मी।'' नाम से पता चलता है कि उसकी मां को अपने बेटे से क्या उम्मीद होगी, परन्तु जक्कई को यरीहो के लोग न तो शुद्ध और न ही धर्मी मानते थे। अगले भाग में इसका कारण दिया गया है, ''... जो चुंगी लेने वालों का सरदार और धनी था।[10]'' (आयत 2)। चुंगी लेने वाले आज की तरह ही बदनाम होते थे। मैंने कभी किसी मां-बाप को यह कहते नहीं सुना कि ''मैं अपने बच्चे को चुंगी लेने वाला बनाना चाहता हूं।'' मैंने कभी किसी बच्चे को यह कहते नहीं सुना कि ''मैं चुंगी लेने वाला बनूंगा!''

मेरा एक दोस्त है, जिसने कई सालों तक कर विभाग में काम किया। कभी-कभी वह अपने काम के बारे में बताता था। मेरे दोस्त को लोगों की जासूसी करने का काम बहुत बुरा लगता था कि वे सही टैक्स भर रहे हैं या नहीं। जितनी जल्दी हो पाया उसने विभाग से रिटायरमैंट ले ली।

फिर भी, आज कर इकट्ठा करने का काम मसीह के समय के मुकाबले सम्मान वाला माना जाता है। पलिश्तीन में चुंगी या महसूल लेने वाले यहूदी होते थे जो रोमी सरकार के लिए काम करते थे। वह अपने लोगों से कर लेकर उस देश के लोगों को देते थे, जिन्होंने उन्हें अपने अधीन किया

हुआ था। इसके अलावा चुंगी लेने वाले लोग आमतौर पर बेईमान ही होते थे। महसूल लेने वाला बनने के लिए रोमी सरकार से रियायत लेनी पड़ती थी (जिसके लिए आमतौर पर घूस देनी पड़ती थी)। फिर रोमी लोग बताते थे कि साल में कितना पैसा जमा करवाना है, कई बार यह पैसा पेशगी के रूप में भी लिया जाता था। वे रोमी सरकार को दिए जाने वाले पैसे से अधिक पैसा लेकर लोगों से कमाई करते थे। बहुत से चुंगी लेने वाले मनमर्जी से पैसे इकट्ठे करते थे।[11] यह काम लालच, बेईमानी तथा भ्रष्टाचार से भरा हुआ था।

इस कारण दूसरे यहूदी चुंगी लेने वालों को विद्रोही तथा गद्दार मानते थे जो अब्राहम की संतान नहीं थे। चुंगी लेने वाला व्यक्ति अदालत में गवाही नहीं दे सकता था। चुंगी लेने वाले को आराधनालय में जाने की अनुमति नहीं थी। तालमुड[12] में कहा गया था कि यहूदी व्यक्ति चोर, लुटेरे तथा महसूल लेने वाले से झूठ बोल सकता है। बाइबल में चुंगी लेने वालों को बदनाम लोगों से मिलाया गया है; ''महसूल लेने वाले और पापी'' (मत्ती 9:10[13]); ''अन्यजातियों और महसूल लेने'' (मत्ती 18:17), ''महसूल लेने वालों और वेश्या'' (मत्ती 21:31, 32), ''अन्धेर करनेवाला, अन्यायी और व्यभिचारी, ... इस चुंगी लेनेवाले'' (लूका 18:11)।

जक्कई केवल चुंगी लेने वाला ही नहीं था, बल्कि चुंगी लेने वालों का *सरदार* था। बार्कले ने ''कमिश्नर ऑफ टैक्सस'' अनुवाद किया है। साफ़ है कि जक्कई ने उस पूरे इलाके का चुंगी लेने का ठेका ले रखा था। पलिश्तीन में कैसरिया, कफरनहूम तथा यरीहो, चुंगी लेने के तीन केन्द्र हैं। जक्कई के पास कम से कम तीसरे हिस्से का ठेका होगा। अगर यह सही है तो पलिश्तीन के उस पूरे इलाके में उसके लिए चुंगी या महसूल इकट्ठा करने वाले लोग काम कर रहे होंगे और वह इन चुंगी लेने वालों से हिस्सा लेता होगा। उस इलाके में यहूदियों की नज़र में, जक्कई माफिया का सरदार यानी यहूदी दादा था।[14]

जक्कई के कारोबार को देख कर अगली आयत को पढ़कर हमें हैरानी नहीं होती कि वह ''धनवान था'' (आयत 2)।[15] हम व्यापारिक मार्ग पर यरीहो के प्रमुख स्थान की पहले ही बात कर चुके हैं। यह चुंगी लेने वालों का पंसदीदा स्थान था और जक्कई ने इसका पूरा-पूरा लाभ उठाया था।

क्या जक्कई की सम्पत्ति ने उसे सुखी आदमी बना दिया था? मुझे नहीं लगता कि मुझे बाइबल से ढूंढ़ने की आवश्यकता है कि बाइबल कहे कि जक्कई के पास बहुत *सम्पत्ति* तो थी, पर वह सुखी नहीं था। यरीहो में शायद सबसे अधिक ईर्ष्या उसी से की जाती थी। जब यीशु उसके साथ उसके घर में आया तो बाइबल हमें बताती है कि ''*सब* लोग कुड़कुड़ाकर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा उतरा है'' (आयत 7)। नगर में सबसे घृणित व्यक्ति अर्थात समाज से निकाला होने पर उसे कैसा लगेगा? कल्पना करें आपकी पत्नी, आपके बच्चों पर इसका क्या असर होगा!

इतना ठुकराया हुआ होने पर मुझे नहीं पता कि कैसा लगता होगा परन्तु इतना अवश्य है कि उसे अच्छा नहीं लगता होगा। जक्कई की लोकप्रियता में कमी के बारे में विचार करते हुए मुझे बचपन की एक बात याद आई। हम कई जन बेसबाल खेलने के लिए इकट्ठा हुए। मैं बेसबाल अच्छी तरह से नहीं खेलता था (मेरे कोच ने एक बार बताया था कि मेरे हाथ और मेरी आंख का इस्तेमाल सही नहीं है), परन्तु मैं दूसरे लड़कों के साथ रहना चाहता था। ''अपने-अपने खिलाड़ी

चुनने'' के साथ खेल शुरू हो गया। एक-एक करके सब लड़के चुने गए। अन्त में जो रह गया वह मैं ही था। बड़ा लड़का जिसकी चुनने की बारी थी, ठंडी सांस लेते हुए बोला, ''कोई बात नहीं, मैं रोपर को अपनी ओर ले लेता हूं।''[16]

यदि यरीहो में किसी ने चुनना होता तो जक्कई को किसी ने भी नहीं चुनना था। उसे किसी टीम में खेलने की अनुमति नहीं मिलनी थी। सब उससे नफरत करते थे और उसे तुच्छ जानते थे। वह बहुत दुखी होता होगा।

मेरा मानना है कि जाने अनजाने में जक्कई यीशु को ढूंढ़ रहा था। क्योंकि वह अपने जीवन का पासा पलटने के लिए यीशु की मदद चाहता था। उसने सुना हुआ होगा कि यीशु महसूल लेने वालों तथा पापियों का मित्र है (मत्ती 11:19)। उसने सुना हुआ होगा कि यीशु ने मत्ती नाम के महसूल लेने वाले को अपना चेला बनने के लिए बुलाया है (लूका 5:27)। मत्ती भी जक्कई का मित्र ही हो सकता है। यीशु को खोजने के जक्कई के उद्देश्य तो मुझे नहीं पता, परन्तु मेरा विश्वास है कि उसे मदद की ज़रूरत थी।

सम्पत्ति के इस छोटे से सबक को सुनें: धन तथा सामान से खुशी नहीं खरीदी जा सकती। धन एक जगह टिक कर नहीं रहता[17] और सामान चैन नहीं दे सकता। खुशी पाने के लिए हमें दूसरों के साथ सम्बन्धों की आवश्यकता होती है। खास तौर पर हमें अपने परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध बनाने की आवश्यकता है।

प्रभु की खोज करने पर एक छोटा सबक (लूका 19:3, 4)

''वह यीशु को देखना चाहता था कि वह कौन सा है?'' मूल में है, ''और वह यीशु से भेंट करने की *खोज में था,* कि वह कौन है?'' नये नियम में जहां भी ''ढूंढ़ना'' शब्द का कोई भी रूप आया है, उससे लगन से प्रयास करने का संकेत मिलता है;[18] इससे कभी भी ऊपरी मन से प्रयास करने का संकेत नहीं मिलता है। जक्कई ने सुना था कि यीशु यरीहो में से होकर गुज़र रहा है और उसने उसे देखने का *निश्चय* किया।

परन्तु कोशिश करने पर ''भीड़ के कारण देख न सकता था! क्योंकि वह नाटा था'' (आयत 3)। पर्व मनाने के लिए यरूशलेम जा रहे यात्री यीशु के इर्द-गिर्द इकट्ठे थे और उनके साथ जा रहे थे। इसके अलावा आगे खबर पहुंच चुकी थी इस लिए लोग यरूशलेम की सड़कों पर तीन-चार फुट जगह घेर कर रुके होंगे।

जक्कई की समस्या आयत के अन्तिम भाग में बताई गई है: ''क्योंकि वह नाटा था'' (आयत 3)। स्पष्ट शब्दों में कहें तो वह *नाटे कद* का था। मैं उसे भीड़ में से निकलते हुए धक्के मारने की कोशिश करते हुए देख सकता हूं ताकि वह यीशु को देख सके। लोग उसे पहचान कर पीछे धकेलने लगे। उन्होंने उसे गले से पकड़ा उसकी कमर में कुहनियां मारीं और उसके पैरों के ऊपर चढ़ गए।[19] फिर मैं उन्हें पीछे खड़े। एड़ियां उठा-उठा कर, भीड़ के ऊपर से देखने की कोशिश करते देखने की कल्पना कर सकता हूं, परन्तु कुछ लाभ नहीं हुआ। जल्दी ही यीशु निकल गया और नाटे कद का होने के कारण जक्कई उसकी झलक भी न पा सका।

''नाटे कद वाले'' लोगों के लिए कुछ बात कहने के लिए यहां रुकना पड़ेगा। मेरा विचार है कि यरीहो में जक्कई के नाटे कद के कई लोगों पर भद्दे मज़ाक और गंदे गीत बनाए होंगे। हम भी

एक गीत गाते हैं, ''जक्कई एक छोटा आदमी था'' परन्तु किसी प्रकार का अपमान करने के लिए नहीं, लेकिन मैं अनुमान लगाता हूं कि जक्कई को देखकर यरीहो के बच्चे, उसके नाटा होने के गीत गाते होंगे।[20] किसी के कद के कारण उसका मज़ाक उड़ाते समय मैं भी उतना ही बुरा हूंगा जितना कोई और हो सकता है।[21] पर ''नाटे कद के'' अधिकतर लोग जिन्हें मैं जानता हूं, बड़े ही विशेष हैं। इतिहास में मेरा ध्यान नैपोलियन की ओर जाता है। जब मैं छोटा था, तो हमारे युद्ध में लड़ने वालों में औडी मरफी नाम का एक नाटे कद का आदमी था, बाद में वह फिल्म सार बन गया। अब और पहले फिल्मों के कई स्टार ''नाटे कद के'' हुए हैं।[22] आर्की गैरिसन का नाम ध्यान में आता है जो एक और नाटे कद का व्यवसायिक कृषि का गुरु हुआ है।[23] आर्की को अपनी कक्षा में फार्म पर काम करने वाले लड़कों से कोई दिक्कत नहीं थी। वह उनकी आंखों में आंखें डाल कर कहता, ''मेरा कद छोटा हो सकता है; परन्तु मेरी काया ठीक है!''

मैं कल्पना करता हूं कि जक्कई की ''काया ठीक थी'' क्योंकि वह एक साहसी व्यक्ति था। उसने यीशु को देखने का निश्चय किया था ... पर कैसे? शायद उसने सड़क के किनारे लगे पेड़ों को और शाखाओं पर बैठे छोटे लड़कों को देखा तो उसका चेहरा खिल उठा।

''तब वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया'' (आयत 4)। उस ज़माने में अधेड़ उम्र के लोग विशेषकर बड़े लोग भागते नहीं थे। वे धीरे-धीरे रौब से चलते थे। परन्तु जहां तक जक्कई की बात थी, उसके लिए यीशु को देखना किसी भी सम्मान से बढ़कर था, अपने कपड़े टांग कर वह छोटी-छोटी टांगों से भागने लगे। भीड़ के ऊपर से होकर वह धीरे-धीरे जाती भीड़ से आगे निकल गया।

जक्कई ''उसी मार्ग से जाने वाला था'' (आयत 4)। जक्कई कोशिश करके उस पेड़ पर चढ़ गया और उसकी एक शाखा पर टांगें दोनों ओर करके बैठ गया। भाग कर पेड़ पर चढ़ने की अपनी इस हरकत से वह छोटे चच्चों की तरह बन गया![24] (मैं अब अधिक नहीं भागता, पेड़ पर चढ़े तो अरसा हो गया है!) जक्कई ने ठाना हुआ था कि उसे यीशु को देखना है, और अपने मार्ग में वह *किसी को नहीं* आने देगा, चाहे वह भीड़ हो, उसका कद या उसका घमण्ड ही क्यों न हो!

मूसा ने प्रभु से मिलने पर हमारे इस छोटे सबक को ऐसे लिखा है: ''परन्तु वहां भी यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा को ढूंढ़ोगे, तो वह तुम को मिल जाएगा, शर्त यह है कि तुम *अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से* उसे ढूंढ़ो'' (व्यवस्थाविवरण 4:29)। कई साल पहले एक चेला और गुरु इकट्ठे जा रहे थे। चेले ने गुरु से पूछा कि प्रभु को कैसे पाया जा सकता है? गुरु ने उस जवान को कस कर पकड़ा और उसे पकड़े रखा। जब गुरु ने उसे छोड़ा तो चेला बड़ा ही घबराया हुआ, उसके सिर से पानी गिर रहा था और सांसें उखड़ी हुई थीं। गुरु ने कहा, ''जब तुम प्रभु को ऐसे ढूंढ़ो जैसे सांस लेने के लिए तड़प रहे थे, तो तुम उसे पा लोगे!'' जक्कई प्रभु को ढूंढ़ने के लिए तन-मन से कोशिश कर रहा था! सच्चाई की खोज के लिए हमारे मन में भी यही लगन होनी आवश्यक है (यूहन्ना 8:32)!

करुणा पर एक छोटा सबक (लूका 19:5-7)

''जब यीशु उस जगह पहुंचा तो ऊपर दृष्टि'' (आयत 5)। KJV वाले बाइबल के अंग्रेज़ी संस्करण में ''उसने ऊपर दृष्टि करके उसे देखा'' है। जक्कई ने सोचा होगा कि बड़े-बड़े पत्तों में

छिपने पर वह किसी को दिखाई नहीं देगा, परन्तु यीशु को देख लेगा। इस कहानी के अन्त वाली आयत (आयत 10) याद रखें। केवल जक्कई ही यीशु को नहीं ढूंढ़ रहा था, यीशु भी उसे ढूंढ़ रहा था। यीशु खोए हुओं को ढूंढ़ रहा था।

उसने उससे कहा, ''हे जक्कई झट आ'' (आयत 5)। यीशु द्वारा जक्कई को नाम लेकर पुकारने पर जक्कई चकित हुआ![25] यीशु उसके बारे में सब कुछ जानता था। उसका नाम, उसकी आवश्यकता, उसके मन की पीड़ा और उसके सामर्थ तक सब उसे पता था।

''हे जक्कई झट आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है'' (आयत 5)। अजीब नहीं लगता? यीशु ने स्वयं को जक्कई के घर में आमन्त्रित कर लिया! यदि हम पहले कभी न मिले हों। और मैं आपको बुला कर कहूं कि ''मैं आप के साथ आपके घर चल रहा हूं। खाने में क्या बनाओगे?''[26] तो आप को कैसा लगेगा? परन्तु यीशु को जक्कई के घर जाने के लिए अपने आप को निमन्त्रण देना पड़ा। क्योंकि जक्कई स्वयं उसे कभी नहीं बुला सकता था, फरीसियों और शास्त्रियों सहित रब्बी लोग चुंगी लेने वालों के घरों में नहीं जाते थे। (मैं कल्पना कर सकता हूं कि जक्कई एक बहुत बड़े भोज की तैयारी कर रहा है। जिसमें वह सैकड़ों लोगों को निमन्त्रण भेजता है और भोज की रात कोई भी नहीं पहुंचता।) नहीं, जक्कई ने यीशु को नहीं बुलाना था, इसलिए यीशु ने अपने आप को स्वयं ही बुला लिया।

''आज तेरे घर में रहना अवश्य है'' में ''अवश्य है'' शब्दों पर ध्यान दें। यीशु ''खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया'' था और जक्कई खोया हुआ था। इस नाटे कद वाले आदमी को देख यीशु ने जान लिया वह वहां क्यों है। तभी तो यीशु ने जक्कई से कहा कि ''तेरे घर में उद्धार लाने के लिए मेरा तेरे घर रहना आवश्यक है!''

परन्तु याद रखें कि जक्कई यीशु के निमन्त्रण को ठुकरा भी सकता था। यीशु ने कभी किसी से जबर्दस्ती नहीं की। प्रकाशितवाक्य 3:20 में इस कहानी को समझाया गया है, जहां यीशु ने मसीही लोगों से कहा, ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।'' यीशु जक्कई के घर में जाने के लिए पूछ रहा था, ताकि वह उसके साथ खा सके। परन्तु यह जक्कई पर निर्भर था कि वह यीशु के भीतर आने के लिए ''द्वार खोलता'' है या नहीं। (यीशु हमारे दिलों के द्वार पर खड़ा होकर अन्दर आने के लिए पूछता है। परन्तु उसे अन्दर आने दें या न, यह हमारी इच्छा पर है।)

जक्कई ने क्या किया? ''वह तुरन्त उतरकर'' नीचे आ गया (आयत 6)। उसे पेड़ पर से फुर्ती से उतरते देखें। उसे अभी भी अपने कद का ध्यान नहीं था। ''आनन्द से उसे अपने घर को ले गया'' (आयत 6)। शायद जक्कई बहुत देर के बाद खुश हुआ था, परन्तु अब तो उसके चेहरे की चमक बढ़ गई होगी![27] खुशी उसके जीवन में आ गई थी क्योंकि यीशु उसके जीवन में आ गया था।

वाल्ट डिज़नी के काम से परिचित बच्चों को स्क्रूज़ मैक्डक का पता है, जो ''संसार की सबसे धनी बत्तख है।'' स्क्रूज मैक्डक प्रसन्न है, क्योंकि उसके पास धन से भरा एक स्विमिंग पूल है। स्क्रूज़ को इस स्विमिंग पूल में गोता लगाना और धन में तैरना अच्छा लगता है। स्क्रूज़ मैक्डक केवल एक कार्टून कैरेक्टर है, परन्तु यह हजारों उन लोगों का चित्रण है, जिन्हें लगता है कि खुशी

ढूंढ़ने का यही तरीका है। परन्तु जक्कई ने पाया कि धन इकट्ठा करके खुशी नहीं पाई जा सकती। बल्कि खुशी उसके जीवन में तब आई, जब यीशु ने उस पर ध्यान किया और उस पर तरस खाया।

यीशु और जक्कई के घर जाते हुए[28] आयत 7 में भीड़ की प्रतिक्रिया मिलती है: ''यह देखकर सब लोग कुड़कुड़ाकर कहने लगे, वह तो एक पापी मनुष्य के यहां जा उतरा है।'' ''सब'' शब्द से लगता है कि सभी लोग जो यीशु के साथ जा रहे थे, बुड़बुड़ कर रहे थे। यरीहो में रहने वाले लोग बुड़बुड़ कर रहे थे। हर कोई नाराज़ था। यीशु अकसर इस बात पर ज़ोर देता था कि उसका उद्देश्य खोए हुओं को ढूंढ़ना और उनकी सहायता करना है (लूका 15)। इससे पहले जब महसूल लेने वालों और पापियों के साथ के कारण उसका विरोध हुआ था तो उसने कहा था, ''वैद्य की आवश्यकता भले चंगों को नहीं, परन्तु बीमारों को होती है'' (मत्ती 9:12)। परन्तु उसको सुनने वालों के लिए यह कठिन सबक था।[29]

आपको और मुझे करुणा या तरस पर एक छोटा सा सबक लेने की आवश्यकता है और वह सबक यह है कि यीशु सबसे प्रेम करता है। किसी के जीवन में चाहे कुछ भी क्यों न हुआ हो यानी वह पाप में कितना भी क्यों न डूबा हो, या कितना भी बदनाम क्यों न हो, यीशु उससे प्रेम करता है और हमें भी चाहिए कि हम उससे प्रेम करें!

मन फिराव पर एक छोटा सबक (लूका 19:8)

लूका ने यीशु के जक्कई के घर में रहते समय हुई बातचीत नहीं लिखी है। आप जानना नहीं चाहेंगे कि यीशु उसके घर कितनी देर तक रहा, उन्होंने क्या बातें कीं और यीशु ने इस नाटे कद वाले आदमी के मन को कैसे छुआ? आयत 8 में लूका केवल इसका निष्कर्ष बताता है, ''जक्कई ने खड़े होकर''। जक्कई जो भी कर रहा हो, एक घोषणा करने के लिए अचानक उठ गया। मूल में है, ''और खड़े होकर जक्कई ने कहा।''[30] खाने के समय वह शांत था इसलिए जक्कई की घोषणा खाने से पहले या खाने के बाद ही हुई होगी। सब का ध्यान अपनी ओर करने के लिए और अपनी बात की गम्भीरता पर ज़ोर देने के लिए ज़क्कई पैरों के बल खड़ा हो गया।

जक्कई ने प्रभु से बात की: ''मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं'' (आयत 8)। मूल भाषा में ''देता हूं'' वर्तमान काल में है[31] यानी मूल भाषा में यह ''मैं निर्धनों को *दे रहा हूं*'' है। उस ज़माने में निर्धनों को ढूढ़ंने की आवश्यकता नहीं होती थी यानी वे दिन-रात यहूदी लोगों के आस-पास रहते थे। यह कह कर जक्कई मुट्ठी में सिक्के भर कर, दरवाज़े की ओर भागा और चकित भिखारी को पकड़ा दिए होंगे![32]

जक्कई के घर के बाहर लोग कुड़-कुड़ कर रहे थे। घर के अन्दर उसका मनपरिवर्तन हो रहा था।

जक्कई बोलता रहा: ''और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं'' (आयत 8)। मूल भाषा में यह एक नम्बर का सशर्त वाक्य था। जिससे किसी बात के सही होने का पता चलता है। हम नहीं जानते कि उसने किसी को जान बूझ कर धोखा दिया था या अनजाने में (याद रखें कि जक्कई के साथ काम करने वाले कई लोग थे)।

''उसे चौगुना फेर देता हूं'' (आयत 8)। व्यवस्था के अनुसार यदि कोई चोर चोरी मान ले

तो उसे चोरी के माल के साथ पांचवां भाग लौटाना पड़ता था।[33] यदि उसने 100 रुपये चुराए हों तो उसे 120 रुपये लौटाने पड़ते थे। कुछ गंभीर मामलों में दो गुना या चौगुना भी लौटाना पड़ता था,[34] परन्तु जक्कई के मामले में ये बातें नहीं थीं। जक्कई को चौगुना लौटाने की *आवश्यकता* नहीं थी। परन्तु उसका मन कम से कम लौटाने का नहीं था। एक अर्थ में उसने कहा, ''यदि मैंने किसी से 100 रुपए लिए हैं तो मैं उसे 400 रुपए वापस करता हूं!''

जक्कई का व्यवहार बाइबल के अनुसार मन फिराने के विशेष पहलू को सुन्दरता से दर्शाता है। न फिराने शब्द मिश्रित यूनानी शब्द से अनुवादित हुआ है, जिसका अर्थ है ''मन या व्यवहार को बदलना।'' मनुष्यों पर इस शब्द को लागू करने पर इसका अर्थ *पाप* के विषय में मन या व्यवहार को बदलना है। इससे यह संकेत मिलता है कि किसी पाप की भयावता को देखकर परमेश्वर की सहायता से अपने जीवन में से निकाल देने की ठान ली। मन फिराव का मुख्य पहलू मानवीय तौर पर, जहां तक हो सके *पिछली बातों की भरपाई करने को तैयार होना है।* मैं इस शब्द को ''मानवीय तौर पर जहां तक हो सके'' इसलिए कहता हूं क्योंकि कई बार अतीत को भूलना असम्भव हो सकता है। उदाहरण के लिए, पतरस ने यीशु को क्रूस देने वाले लोगों को मन फिराने के लिए कहा (प्रेरितों 2:23, 38)। परन्तु वह किसी भी तरह अपने इस भयावक काम को नहीं बदल सकते थे, परन्तु कई मामलों में कुछ वसूली हो सकती है। इसीलिए यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपने सुनने वालो से कहा था कि ''मन फिराव के योग्य फल लाओ'' (लूका 3:8)। उस पुत्र के मामले में जिसने पिता के आग्रह पर खेत में जाने से इनकार कर दिया था, ''बाद में पछता कर गया'' (मत्ती 21:29)। अफसोस की बात है कि मन फिराव के मामले में हर्जाने के महत्व को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है।

मनपरिवर्तन का कठिन भाग बपतिस्मा नहीं, बल्कि मन फिराव है। मन फिराव के लिए टूटा हुआ मन होना आवश्यक है। मन फिराने का अर्थ है कि कोई इतना पिघल गया है कि वह अपने जीवन में सचमुच परिवर्तन लाना चाहता है! यदि आपके मन परिवर्तन से आपके जीवन में परिवर्तन नहीं आया है तो आप को फिर से विचार करने की आवश्यकता है कि आप सचमुच बदले भी हैं या नहीं।[35]

जक्कई के मनपरिवर्तन से उसका जीवन बदल गया था! हमारे लिए मन फिराने पर यह छोटा सा सबक सीखना आवश्यक है।

बचाए जाने पर एक छोटा सा सबक (लूका 19:9, 10)

यीशु ने जक्कई को बातों का उत्तर दिया: ''आज इस घर में उद्धार आया है'' (आयत 9) उद्धार जक्कई के घर में आया था क्योंकि यीशु जक्कई के घर में आया था, क्योंकि जक्कई ने यीशु के प्रेम और करुणा को स्वीकार किया था।

यीशु ने और कहा, ''इसलिए कि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है'' (आयत 9)। फरीसी नहीं मानते थे कि जक्कई अब्राहम का पुत्र है, परन्तु यीशु ने कहा कि वह अब्राहम का पुत्र ही है। बल्कि यीशु तो इससे भी बढ़कर कह रहा था कि जक्कई अब्राहम का असली पुत्र है क्योंकि उसने अब्राहम वाला *विश्वास* ही किया था।[36] दूसरी ओर फरीसी लोग जो अपने खून पर गर्व करते थे, अब्राहम की असली संतान नहीं थे, क्योंकि वे यीशु पर विश्वास नहीं करते थे।

इसके बाद, हमें चौंकाने वाले शब्द पढ़ने को मिलते हैं: ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार करने आया है'' (आयत 10)। इस आयत में घोषणा है कि हम *खोए हुए* अर्थात अपने अपने पापों में खोए हुए हैं। हम में से कइयों ने प्रचार के दौरान कई बार ''खोए हुए'' शब्द सुना है कि केवल यह ''उद्धार पाए हुए'' का विपरीत शब्द लगता है। परन्तु ''खोए हुए'' शब्द का मूल अर्थ है ''जो अपने स्थान से हट गया है और इस कारण बेकार है।'' इस अर्थ को लूका 15 में यीशु द्वारा सुनाई गई, खोए हुए सिक्के, खोई हुई भेड़ और खोए हुए लड़के की कहानियों से समझा जा सकता है। मनुष्य परमेश्वर से अलग हो गया था और उसके उद्देश्य को पूरा करने के योग्य नहीं था। जब आप और मैं खोए हुए होते हैं तो हम जीवन में अपने उद्देश्य को जो कि परमेश्वर की महिमा करना है, पूरा नहीं कर सकते (मत्ती 5:13-16)!

परन्तु इस वचन का सबसे अनोखा भाग यह है कि यीशु खोए हुओं को ढूंढ़ने आया। याद रखें कि ''ढूंढ़ने'' शब्द का अर्थ *धुन लगाकर* ढूंढ़ना, ढूंढ़ने और पाने के लिए जो भी आवश्यक हो उसके लिए प्रयास करना। यीशु हमें ढूंढ़ने और परमेश्वर के पास वापस ले जाने के लिए आया ताकि हम वहां हों जहां हमें होना चाहिए और वह काम कर सकें जो हमें करना चाहिए।

उद्धार पर यह एक छोटा-सा सबक है। यीशु ढूंढ़ने और *उद्धार करने* आया। यीशु शीघ्र ही यरीहो से यरूशलेम की कठिन यात्रा करने वाला था। उसने अपने शत्रुओं के सामने जाना था और सप्ताह से थोड़ा अधिक समय में क्रूस पर मर जाना था। इस संसार में यीशु के आने का यही उद्देश्य था। (जब मैं और आप यीशु के इस निमन्त्रण को स्वीकार नहीं करते तो हम अपने जीवनों में यीशु के उद्देश्य को सफल नहीं होने दे रहे हैं!)

जक्कई के लिए यह कितना यादगारी दिन था, जब यह ''छोटा नाटा आदमी'' यीशु के पीछे चलने वाला एक ''बड़ा नाटा'' बन गया![37]

सारांश

अपने आप को जक्कई बनाना कठिन नहीं है। उस छोटे कद के आदमी तथा हम में से कई लोग आत्मिक और भावनात्मक तौर पर ''पेड़ पर बैठे''[38] हैं, यानी हमारे जीवन बीच में लटके हुए हैं। हमारी जो भी स्थिति हो, हम जहां भी हों, यीशु हमारी ओर देखता है और आज भी कहता है, ''मैं तेरे घर जाऊंगा, तेरे जीवन का भाग बनूंगा।'' जक्कई की तरह ही, हम भी चाहें तो यीशु के निमन्त्रण को स्वीकार कर सकते हैं या उसे ठुकरा सकते हैं।

उस सुबह जक्कई को पता नहीं होगा कि आज का दिन कितना रोमांचभरा हो सकता है। मैं नहीं जानता कि आज आप के लिए कैसा दिन चढ़ा था। शायद आप थके हुए और नींद में ही उठे थे। हो सकता है कि इस दिन आप में कोई सुधार न हुआ हो।[39] परन्तु यदि आप यीशु को अपने दिल के द्वार पर खड़े अन्दर आने के लिए कहता सुन सकते हैं तो आपका दिन कितना भी यादगारी बन सकता है! यदि आप उसके प्रेम को स्वीकार कर लेते हैं तो आपके लिए कहा जा सकता है, ''आज उद्धार [आपके] घर आया है!''

टिप्पणियां

[1]एक प्रवचन में, सब बच्चों को जिन्होंने जक्कई के बारे में सुना हो, हाथ उठाने के लिए कहा जा सकता है। [2]यह गीत बच्चों के साथ गया जा सकता है। [3]अलग-अलग इलाकों में शब्दों में अन्तर पाया जाता है: ऑस्ट्रेलिया और बर्तानवी पृष्ठभूमि वाले कई देशों में ''आज तेरे घर में मैं चाय पीऊंगा'' भी गाते हैं। [4]इसका अर्थ यह है कि इसका आरम्भ लिखित दस्तावेजों से पहले कहा है। [5]यरीहो के स्थान पर कुल सात परतें बनाई गई थीं। [6]इसे ''खजूरों का नगर'' कहा जाता था। [7]नगर की सुन्दरता इस तथ्य में दिखाई देती है कि मार्क एंटनी ने अपने प्रेम के प्रमाण के रूप में क्लियोपैट्रा को यह नगर दे दिया था। [8]यह मूल धर्मशास्त्र का शाब्दिक अर्थ है। NIV में इसे ''गूलर-अंजीर का पेड़'' कहा गया है। [9]NASB के आरम्भिक संस्करणों में एक टिप्पणी में शहतूत-अंजीर के पेड़ लिखा गया है। [10]KJV में ''publican'' है, जो सरकारी सेवा में लगे आदमी के लिए इस्तेमाल होता है, परन्तु संसार के कुछ भागों में पब्लिकन, पब यानी बीयर बेचने वाली जगह को कहा जाता है।

[11]यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने महसूल लेने वालों को आज्ञा दी थी कि ''जो तुम्हारे लिए ठहराया गया है उससे अधिक न लेना'' (लूका 3:13)। [12]तालमुड व्यवस्था के एक यहूदी टीका को कहा जाता था। [13]देखें मत्ती 11:19; लूका 7:34. [14]''माफिया'' और ''दादा'' कई जगह बदमाशों के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले प्रचलित शब्द हैं। इस विचार को समझाने के लिए और शब्दों का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। [15]सम्भावना है कि जक्कई पूरी ईमानदारी से धनवान बना था। परन्तु मैं मानता हूं कि वचन में इन शब्दों की स्थिति संदर्भ के साथ यह संकेत देने के लिए थी कि जक्कई वैसा ही बदमाश था, जैसे यहूदी लोग महसूल लेने वालों को समझते थे। [16]अधिकतर वयस्कों का अपने बचपन में कुछ ऐसा अनुभव होगा कि जिसमें उन्हें लगा कि उन्हें बाहर निकाल दिया गया है। आप अपना अनुभव बता सकते हैं। [17]बाढ़ों, तूफ़ानों या किसी ऐसी प्राकृतिक आपदा पर हाल ही के मुख्य समाचार जिनसे सम्पत्ति की हानि हुई हो, बताए जा सकते हैं। जुडसोनिया, आरकैंसा जहां मैं रहता हूं, 1952 में आए भीषण तूफ़ान से पूरी तरह नष्ट हो गया था। [18]KJV में इब्रानियों 11:6 देखें, जहां ''खोज'' के लिए ''*diligently* seek'' अनुवाद किया गया है। [19]यीशु को देखने की कोशिश करने के लिए भीड़ में जाने के लिए जक्कई, अपनी जान हथेली पर रख रहा होगा, परन्तु उसने उसे देखने का इतना दृढ़ निश्चय किया हुआ था। [20]''जक्कई एक छोटा आदमी था, हा, हा, हा, हा ,हा, हा'' जैसा बच्चों के सुर में कोई गीत गाकर इसे समझाया जा सकता है।

[21]कितनी बार छोटे कद के लोगों को ''खड़ा होने'' के लिए कहा गया है, जबकि वे पहले ही वहां खड़े होते हैं? [22]कालांतर का एक स्टार एलन लैड हुआ है और वर्तमान में डुडली मूर, डस्टिन हॉफमैन और डैनी डेविटो हैं। बेशक छोटे कद की लड़कियां भी फिल्म स्टार हैं। [23]लोन वुल्फ, ओक्लाहोमा में मेरे पिता से पहले आरकी गेरीसन ही शिक्षक था। [24]जब मेरा पोता सेथ हमारे पास आता है, किसी पेड़ के पास जाने पर सेथ ने उस पर चढ़ना होता है! [25]मेरा अनुमान है कि यीशु का जक्कई का नाम वैसे ही पता होगा जैसे उसे यह पता था कि उसके अन्दर कौन है (यूहन्ना 2:24, 25; लूका 6:8; 11:17 भी देखें)। [26]एक प्रवचन में मैं कहता हूं, ''यदि आराधना के बाद मैं आपके साथ चल पड़ूं और कहूं 'मैं आज आप के घर में खाना खाऊंगा।...'?'' [27]लूका रचित सुसमाचार में आनन्द एक मुख्य विषय है। ''आनन्द'' किसी न किसी रूप में बीस से अधिक बार मिल जाता है। [28]वचन यह नहीं कहता कि यीशु के चेले जक्कई के घर गए या नहीं। मेरे विचार से वे गए होंगे। [29]मत्ती 9:11; 11:19; मरकुस 2:16; लूका 5:30; 7:34. [30]KJV और NIV से यह संकेत मिलता है।

[31]KJV और NIV से यह संकेत मिलता है। [32]*जीज़स* फिल्म में जक्कई को अपने सामने दरवाज़े के इर्द-गिर्द इकट्ठे हुए भिखारियों की ओर सिक्के फैंकते और हंसते हुए दिखाया गया है। हम नहीं जान सकते कि यह सही था कि नहीं, परन्तु जक्कई के जीवन में जो कुछ हुआ था वह निश्चय ही उससे मेल खाता है। [33]गिनती 5:7; लैव्यव्यवस्था 6:5. [34]निर्गमन 22:1, 4, 7. [35]एक लेखक ने तो यह सुझाव दिया है कि यदि हमारा मनपरिर्तवन हमें जक्कई जैसा दयालु नहीं बनाता तो हमारे मनपरिवर्तन पर संदेह किया जाना आवश्यक है। [36]गलातियों 3:29; रोमियों 4:12 भी देखें; गलातियों 3:7. [37]परम्परा के अनुसार जक्कई उस मार्ग में चलता रहा। क्लेमेंट ऑफ़ एलेक्जेंड्रिया ने लिखा है कि जक्कई कैसरिया का एक बिशप (एल्डर) बन गया। [38]इस अभिव्यक्ति का अर्थ है ''आगे बढ़ने का ढंग जानने की कमी।'' [39]एक प्रवचन में मैंने लिखा है, ''आपने इस बात से भी संघर्ष किया होगा कि आज यहां होना है या नहीं।''